'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक ८० | वाराणसी, मंगलवार, ७ जुलाई, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन

पूंच (कश्मीर) १७-६-'५९

ग्रामदान और शान्ति-सेना पर पूरा जोर दें

जब से हम यहाँ आये हैं, लोग हमारे पास आते, अपने सुख-दुःख सुनाते और जमीन की माँग करते हैं। हरिजन और पिछड़ी जमातों के लोग और शरणार्थी जमीन माँगते हैं। पेंशनयाफ्ता सैनिकों ने भी जमीन की माँग पेश करते हुए कहा कि उन्हें बहुत थोड़ी पेन्शन मिलती है, जिस पर गुजारा नहीं हो सकता। जमीन की भूख हरएक को होनी चाहिए। वह हमारी माता है, उसकी खिदमत करने का हक सबको हासिल होना चाहिए। हवा, पानी की तरह से जमीन भी सबके लिए है। इसलिए जमीन की खिदमत का मौका हरएक को हासिल होना चाहिए, यही परमात्मा की ख्वाहिश दीखती है। उसके लिए कारगर इलाज यही है कि जमीन गाँव की बने और सब मिल-जुलकर काम करें। फिर गाँव में दस्तकारियाँ खड़ी कर सकेंगे, जिससे बेरोजगारी का मसला हल हो सकता है।

ग्रामदान में पूरी ताकत लगायें

यहाँ पर कुछ भाइयों ने बहुत मेहनत करके कुछ भूदान हासिल किया है। इस पर किसीने कहा कि यहाँ दबाव से जमीन मिली है। मैंने जवाब दिया कि २२ एकड़ की सीलिंग होने पर दबाव से जमीन हर्गिज नहीं मिल सकती। प्रेम का दबाव हो सकता है और वह तो बाबा का भी हो सकता है। परन्तु वह खुशी का दबाव होगा, जबर्दस्ती का नहीं। इसलिए दिल में जज्बा हो तो उसका भी दबाव हो सकता है। समझना चाहिए कि यहाँ पर लोग प्यार से जमीन दे रहे हैं। इसीसे गाँव का काम बनेगा, क्योंकि उससे प्रेम और धर्म बढ़ेगा। इस काम में बड़े-बड़े कूबतवाले लोग शामिल हैं, यह हमें बहुत अच्छा लगता है। ये सब बड़े लोग इसमें इसलिए लगे हैं कि परमात्मा उनको इसमें लगा रहा है। वही बाबा को पैदल घुमा रहा है और वही इनके दिलों में इन्किलाब ला रहा है। हमने उनसे कहा है कि ग्रामदान में पूरी ताकत लगाइये। सब बीमारियों की जड़ काटनी चाहिए, टहनियाँ काटी जायँ तो नदी फूट निकलती है। सबकी जड़ है मिलकियत। यहाँ ऐसा माहौल पैदा हो रहा है कि ग्रामदान जरूर होंगे। किसीने कहा कि आपके जाने के बाद यहाँ जरूर ग्रामदान होंगे। मैंने कहा कि मेरे बाद नहीं, मेरे सामने ही होने चाहिए। यहाँके लोगों ने बहुत मुसीबतें झेली हैं, ऐसे लोग अक्लमंद होते हैं। खुदा उनके ऊपर-नीचे, बाहर-अंदर, इधर-उधर रहता है। सब तरह से उनकी हिफाजत करनेवाला उनके पास खड़ा है। इसलिए ऐसे लोगों को ठीक से समझाया जाय तो ये जरूर ग्रामदान देंगे।

रिश्वतखोरी : अखलाकी गिरावट

आज कुछ विरोधी पार्टी के भाई हमसे मिलने आये थे। हमने उनसे पूछा कि क्या आप चाहते हैं कि बेखौफ बातें करने के लिए दूसरों को यहाँसे हटा दिया जाय। उन्होंने 'हाँ' कहा तो हमने दूसरों को हटाया। फिर उन्होंने इत्मीनान से बातें कीं। लेकिन उनकी बातें ऐसी नहीं थीं कि जो लोगों के सामने रखी नहीं जा सकतीं। उन्होंने कहा कि यहाँ रिश्वतखोरी बहुत चलती है। मैंने कहा कि यह तो कम-बेशी सभी सूबों में फैली है। मैं मानता हूँ कि रिश्वत देनेवाला और लेनेवाला दोनों गुनहगार हैं। देनेवाले का काम बन जाता है, इसलिए वह रिश्वत देता है और लेनेवाले की दौलत बढ़ती है, इसलिए वह लेता है। दोनों बुरा काम करते हैं, लेकिन उसे जाहिर नहीं करते। 'तेरी भी चुप मेरी भी चुप' चलती है। इस तरह दोनों एक दूसरे की रजामंदी से काम करते हैं। यह अखलाकी गिरावट है, जो सब गिरावटों में ज्यादा खौफनाक है। दूसरी गिरावट हम बर्दाश्त कर सकते हैं, लेकिन अखलाकी गिरावट हर्गिज बर्दाश्त नहीं कर सकते।

रिश्वत कैसे मिटे ?

जब मैंने उन भाइयों से पूछा कि इसका इलाज बताइये तो उन्होंने कहा कि माहौल में फर्क होना चाहिए। लोगों में उसके खिलाफ जज्बा बनना चाहिए। इस तरह लोगों के सामने अखलाकी बातें आयें। इसके सिवाय दूसरा कोई इलाज नहीं सूझता। एक इलाज यह भी है कि सरकार का जाब्ता हो। वह भी होना चाहिए। लेकिन लोगों के हाथ में यही है कि एक माहौल पैदा किया जाय, लोगों को समझाया जाय कि रिश्वतखोरी उसूली तौर पर गलत है। उससे न दीन सधता है, न दुनिया। अक्सर लोग समझाते हैं कि उससे चाहे दीन न

सधे, पर दुनिया तो अवश्य सधती है। लेकिन लम्बी नजर से देखने पर समझ में आयेगा कि उसमें दीन भी जाता है और दुनिया भी। सभी सबको ठगना चाहेंगे तो ठगों का ही राज्य होगा। उस हालत में दुनिया का काम भी नहीं बनेगा।

खुफिया पुलिस और बाबा

किसीने कहा कि इन दिनों जिधर देखो, उधर खुफिया पुलिस रहती है। मैंने कहा कि मुझे इसमें खुशी है। अगर खुफिया पुलिसवाले मेरे साथ रहेंगे तो उनके दिलों पर बहुत असर होगा। मैं तो चाहता हूँ कि हरएक का मुझसे ताल्लुक आये। वे मेरे साथ रहेंगे तो मेरा कुछ बिगड़नेवाला नहीं है, उन्हींका सुधरनेवाला है। अगर हर कोई दूसरे की तरफ शक-शुबहे की निगाह से देखने लग जाय तो मुझे भी लगेगा कि मेरे साथ रहनेवाला कोई खुफिया पुलिस तो नहीं है? और आपको भी मेरे बारे में यही शक पैदा होगा कि यह बाबा दाढ़ीवाला दीखता है, पर शायद खुफिया पुलिस हो। इस तरह हम सब एक-दूसरे की तरफ शक-शुबहे की निगाह से देखते रहेंगे तो माँ-बाप और बच्चे, भाई-भाई भी एक-दूसरे से कतराते रहेंगे और दुनिया का कोई काम नहीं बनेगा। बुराई से दुनिया भी नहीं सधती, इस बात का पक्का यकीन हो जाय तो इन्सान कभी भी उसमें नहीं फँसेगा, गाफिल नहीं रहेगा। वह हमेशा चौकन्ना रहेगा कि हमारे हाथ से कोई गलत काम न हो। वह सोचेगा कि रिश्वत देने का या लेने का मोह नहीं होना चाहिए। फिर रिश्वत के खिलाफ माहौल पैदा होगा। उसके साथ-साथ सरकार के यंत्र में कोई ढिलाई हो तो सरकार भी अपने यंत्र को कस सकती है। यहाँकी सरकार में इस तरह कसने की गुंजाइश है या सब कसा हुआ ही है, यह मैं नहीं जानता।

रिश्वत मिटाने का संकल्प करें

अलावा इसके गाँव-गाँव में सेवा करनेवाले सेवक हों और उनका जाब्ता सब पर रहे। फिर मेरे जैसे लोग, जिनकी जबान में ताकत है और जिन पर लोगों का विश्वास है, वे भी रिश्वतखोरी के खिलाफ कहते रहें तो इन सबका हमला होने पर वह राक्षस नहीं टिकेगा। हमें उसके खिलाफ जद्दोजहद करना होगा और ऐसा मोर्चा खड़ा करना होगा कि हम अपने समाज में ऐसी बदी नहीं रहने देंगे।

इन्सान इन्सान से क्यों डरे?

यहाँ भूदान तो आप दे रहे हैं, लेकिन ग्रामदान भी होने चाहिए और होंगे। सिर्फ होंगे ही नहीं, हम करेंगे, ऐसी बात कीजिये। अलावा इसके, गाँव की सेवा करनेवाले और दंगा-फसाद होने पर शांति-स्थापना करने के लिए, मर मिटने के लिए तैयार रहनेवाले शांति-सैनिक निकलने चाहिए। यहाँसे थोड़ी ही दूरी पर Cease Fire-line (जंगबंदी-लाइन) है। उधर उन्होंने हजारों सिपाही खड़े कर दिये हैं और इधर इन्होंने खड़े कर दिये हैं। इन्सान को इन्सान के ही डरसे इतना सारा करना पड़ रहा है, यह बड़े दुःख की बात है। इन सबका इलाज यही है कि गाँव-गाँव में ग्रामदान और शांति-सेना खड़ी हो। शांति-सैनिक किसीको मारेंगे नहीं और भागेंगे भी नहीं, बल्कि मार खायेंगे, रोते हुए नहीं, हँसते हँसते खायेंगे। उनके दिल में गुस्सा नहीं होगा, बल्कि सबके लिए प्यार और रहम होगा।

सब लोग मिलकर ईश्वर का नाम लें

आज मिलिटरी के कुछ भाई हमसे मिलने आये थे। हमने उनसे पूछा कि 'तुम सब एक साथ खाते-खेलते हो?' उन्होंने 'हाँ' कहा। फिर हमने पूछा कि 'तुम एक साथ प्रार्थना करते हो?' उन्होंने कहा—'नहीं, अलग-अलग करते हैं।' मैंने कहा—'खाने में और खेलने में तो हम एक हो सकते हैं, लेकिन क्या अल्ला कंबख्त है कि वह सबको अलग करता है?' उसका नाम लेने में ही हम एक नहीं हो सकते! समझना चाहिए कि एक ही खुदा के अलग-अलग नाम हैं। कोई उसे राम कहता है। कोई कृष्ण, कोई अल्ला, कोई गॉड, कोई सिद्ध, बुद्ध कहता है। लेकिन चीज एक ही है। पानी को कोई 'वाटर' कहता है, कोई पानी, कोई नीर तो कोई जल। नाम अनेक हैं, लेकिन चीज एक ही है। एक ही व्यक्ति किसीका बाप होता है, किसीका बेटा, किसीका पति, किसीका चाचा तो किसीका दोस्त। इसलिए उसे हर कोई अलग-अलग नाम से पुकारता है। एक मामूली आदमी के ही अनेक नाम और अनेक रिश्ते होते हैं तो भगवान के क्यों न हों। उसके तो अनेक नाम हैं। भगवान का नाम लेने का मौका आये तो सब अलग-अलग क्यों हो जायँ? एक का मुँह इधर रहे और दूसरे का उधर, ऐसा क्यों होना चाहिए? परमेश्वर हमारे परमपिता हैं, हम सब उनकी संतान हैं। इसलिए परमेश्वर का नाम लेने में हम सबको एक होना चाहिए। ◆◆◆

प्रार्थना-प्रवचन

पूंच (कश्मीर) १८-६-'५९

ग्रामदान से कश्मीर को स्वर्ग बनायें

गांधीजी के जाने के बाद हम दिल्ली में गये थे और शरणार्थियों को बसाने का काम हाथ में लिया था। खास करके पंजाब और सिन्ध के शरणार्थी आये थे। तब अधिकारियों से मिलकर, शरणार्थियों को बसाने में सहूलियतें देना वगैरह कामों में हमें बहुत-से अनुभव आये। उसमें पाकिस्तान से पंजाब में आये हुए शरणार्थियों को जमीन देने का काम था। पाकिस्तान में कुछ लोग जमीनें छोड़कर आये थे। रिवाज यह रखा गया था कि जिनकी जमीनें वहाँ हों, उन्हींको यहाँ जमीनें मिलें। नये सिरे से जमीनें देनी हों तो बेजमीनों को भी दे सकते थे, लेकिन यह नहीं बन सका। हमने कोशिश की और बीच में पंजाब सरकार ने हमारे पूज्य राष्ट्रपति के सामने वादा भी किया कि बेजमीनों को भी जमीनें देंगे। इसके लिए हमने दिल्ली की प्रार्थना-सभा में पंजाब सरकार को बधाई भी दी। लेकिन बाद में राज्य-सरकार मुकर गयी। मैं किसीको दोष देना नहीं चाहता, लेकिन इसका मेरे दिल में सदमा रह गया था।

भूदान के आरम्भ की कहानी

उसके बाद मैं हिन्दुस्तान में घूमता रहा। देश की हालत और शरणार्थियों की स्थिति देखता रहा। कुछ दिनों बाद मैं हैदराबाद राज्य में पहुँचा। वहाँ एक गाँव में लोगों ने मेरे पास जमीन की माँग की। उस समय मुझे पंजाब का किस्सा याद हो आया। वहाँ जमीन माँगी गयी थी और वादा करनेवाले मुकर गये थे। इसलिए मैंने सोचा कि सरकार के पास जाने में कोई अर्थ नहीं। यह सोचकर मैंने गाँववालों से कहा कि 'तुम

लोग ही सोचो। तुम्हारे पास जमीनें हैं। कुछ लोग जमीन माँग रहे हैं। तुम लोग उन्हें जमीन दो। अगर इस तरह गाँव की जमात बनेगी तो एक ताकत खड़ी होगी।' एक शख्स उठ खड़ा हुआ और उसने १०० एकड़ जमीन दी। इस घटना को परमात्मा का इशारा समझकर हमने उसी दिन से जमीन माँगना शुरू किया।

आठ साल से मुख्तलिफ सूबों में हमारी यात्रा चलती रही और अब हम जम्मू-कश्मीर में आ पहुँचे हैं। उधर आसाम रह गया है और यह जम्मू-कश्मीर का हिस्सा बचा था। बाकी हिन्दुस्तान के कुल सूबों में कुछ न कुछ घूमना हुआ है।

ग्रामदान से ही गाँव अपनी योजना बना सकेगा

आठ साल बाद जो तजुरबा हुआ, उसमें यह देखा कि सब लोगों के दिल के अन्दर ज्योति है, परमात्मा है। दिल के एक गोशे में कहीं वे बैठे हैं, छिपे हैं। उनसे हम बात करना चाहते हैं तो वे हमारी बातें सुनते हैं। इसीलिए हमने लोगों के सामने जमीन की माँग पेश की और करीब ४०, ४५ लाख एकड़ जमीन लोगों ने दान दी। जहाँ तक हम जानते हैं, इतने बड़े पैमाने पर जमीन का दान, दुनिया की तवारीख में नहीं हुआ है। ६ लाख दाताओं ने यह दान दिया है। उसके बाद हमने और एक बात शुरू की है कि काफी जमीन देते हो, यह तो ठीक ही है; लेकिन अब पूरा ग्रामदान दे दो। याने गाँव में जितनी जमीन हो, सारी गाँव की बना दो, ताकि गाँव का एक कुनबा बने। फिर जमीन की तकसीम कैसे करना, जमीन में कौन-सी फसल बोना, कितनी बोना, गाँव में कौन-सी चीजें लाना—इसके मुताबिक सारी योजना गाँववाले करेंगे। दिल्लीवाले इसकी योजना नहीं बनायेंगे; गाँववाले ही बनायेंगे। हाँ! उसमें सरकार जो चाहे सो मदद देगी। परन्तु आज गाँव एक नहीं है तो वह योजना क्या बनायेगा? जहाँ गाँव की जमात नहीं बनी है, वहाँ भी गाँववाले योजना क्या बनायेंगे? कम्युनिटी प्रोजेक्ट के महकमे के मुखिया डे साहब ने हमसे कहा कि 'गाँवों में, जहाँ कम्युनिटी नहीं है, जहाँ (फरदन-फरदन) अलग-अलग व्यक्ति रहते हैं, वहाँ प्रोजेक्ट क्या होगा? समूह ही नहीं तो सामूहिक विकास कैसे बनेगा? जहाँ समाज नहीं बना है, वहाँ इस्तेमाह तरक्की कैसे होगी?—जहाँ ग्रामदान बनेगा, लोग मालकियत छोड़ेंगे, कुल जमीन गाँव को नजर करेंगे, वे गाँव पांचसाली योजना बना सकते हैं—यह हमने समझाना शुरू किया।

यकीन के तीन रूप

हमें यकीन था कि जो सही चीज होती है, वह लोगों को कबूल करनी ही पड़ती है। इन्सान के दिमाग में ऐसी खुसूसियत है कि जब उसे असलियत का पता चल जाता है तो झट का परदा हट ही जाता है। रोशनी के सामने अंधेरा टिक ही नहीं सकता। भले ही रोशनी लेने में जरा देर हो, पर एक बार रोशनी लेने के बाद अंधेरा नहीं टिकता। हमने यकीन रखा था और वह "इलमुल यकीन" था। हमने देखा, लोग हजार-हजार दानपत्र और ग्रामदान दे रहे हैं। फिर "आयनुल यकीन" हो गया। इस तरह ग्रामदान शुरू हो गया तो फिर हमने 'फिरका-दान' शुरू कर दिया। यहाँ तो बक्शी साहब ने कहा है कि वे इस राज्य का पूरा दान कर सकते हैं। अब उन्होंने कहा है कि 'लेकिन उतना लेने की हमारी कूबत है या नहीं, यह देखना है।' वैसे फिरकादान—जिसे 'महाल' कहते हैं—महालदान बम्बई राज्य में हुआ है। उसका नाम है "अक्राणी महाल।" ३०० गाँवों का पूरा का पूरा फिरका मिल गया है। देखिये, हम यकीन रखकर, लोगों के दिलों पर भरोसा रखकर माँगते चले गये तो हमें मिला।

सारांश, हम पहले मामूली दान माँगते थे, फिर ग्रामदान और बाद में फिरका-दान। पहले "इलमुल यकीन" था, फिर 'आयनुल यकीन' हो गया—साक्षात्कार हो गया। अब हक्नुल यकीन होना चाहिए। यह यकीन की बात क्या है, यह मुसलमान लोग जानते होंगे। शास्त्रों में भी यह बात आती है। मान लीजिये, एक शख्स ने सुना कि लड्डू की पंगत पड़ोस के गाँव में हुई है। सुना तो सही, पर उससे पेट नहीं भरा। इसे इलमुल यकीन कहते हैं। याने उसने सुना। फिर दूसरे ने देखा कि पंगत हो रही है और लोग लड्डू खा रहे हैं। यह 'आयनुल यकीन' हो गया। लेकिन 'हक्नुल यकीन' तब होगा, जब लड्डू खाने को मिलेंगे। इस तरह जब ग्रामदान होगा, ग्रामस्वराज्य होगा—गाँव में बच्चों को तालीम मिलेगी, शामिलात दूकान होगी, गाँव के झगड़े गाँव के बाहर न जायँगे, वकील का मुँह न देखना पड़ेगा, सारी शादियाँ मिली-जुली होंगी—तब जो यकीन होगा, वह "हक्नुल यकीन" होगा। इलमुल यकीन से शुरू हुआ और "हक्नुल यकीन" हो गया है। इसलिए अब हमारे बच्चे, हमारे साथी कोशिश में लगे हैं कि उन गाँवों में कोई 'मूरत बने। उधर ग्रामदान तो मिल रहे हैं। लेकिन यहाँ जम्मू और कश्मीर में जमीन मिल रही है तो लोगों को ताज्जुब हो रहा है। यहाँ सीलिंग हो गया है और उसके बाद भी जमीन मिल रही है। याने लोग जिगर का टुकड़ा काटकर दान दे रहे हैं। यह बहुत बड़ी बात है। बड़ी खुशी की बात है। यहाँ जो लोग देते हैं, उन्हें मुबारक है, शुभ बात है। इसलिए इसके आगे हमारा जी चाहता है कि यहाँ ग्रामदान भी हो। यहाँका राज्य इस काम के लिए अनुकूल भी है।

ऐसे बाग से आग ज्यादा पसन्द

अगर यहाँ यह काम होता है तो हम जो सुनते थे कि कश्मीर स्वर्ग है, वह तो सचमुच स्वर्ग बनेगा। जहाँ कुछ जमीनवाले हों और कुछ बे-जमीन तो वह स्वर्ग कैसे होगा? हम स्वर्ग का वर्णन सुनते थे तो बड़ा अजीब लगता था। क्योंकि कहते थे कि वहाँ कुछ लोग पालकी में बैठते हैं तो कुछ लोगों के कंधे पर पालकी रहती है। हम कहते थे, ऐसा स्वर्ग हमें नहीं चाहिए। हमें ऐसा ही स्वर्ग चाहिए, जहाँ सभी लोग समान हों। हम ऐसे बाग में जाना पसन्द नहीं करेंगे, जहाँ सब नहीं जा सकते। बल्कि ऐसी आग पसन्द करेंगे, जहाँ सबके साथ जा सकें। हमारे सामने ऐसी दो चीजें रखी जायँ तो हम बाग से भी ज्यादा आग को पसन्द करेंगे। वही स्वर्ग है, वही बहिश्त है, जहाँ सब समान हैं। सब भाई-भाई भी नहीं, दोस्त हैं। क्योंकि भाई-भाई में भी एक काफी बड़ा और एक काफी छोटा हुआ करता है।

हमारी माँ हमें कहानी सुनाती थीं। कहती थीं, रामायण में रामजी ने खूब सेवा ली। लक्ष्मण से सेवा ली, बंदरों से सेवा ली। सेवा ले-लेकर आखिर वे थक गये, ऊब गये। वे बड़े भाई बने थे। इसलिए नये अवतार में वे छोटे भाई बन गये—कृष्ण! उस अवस्था में उन्होंने सबकी सेवा की। कहीं हुकूमत नहीं चलायी। मालिक कैसा होना चाहिए? इसका नमूना तुलसीदास जी लिखते हैं "प्रभु तरु तल कपि डार पर।"—बंदर ऊँचे स्थान पर, पेड़ पर बैठते थे और प्रभु पेड़ के नीचे। इसलिए मालिक राजाराम जैसे और सेवक, खिदमतगार कृष्ण जैसे हों। हम

कहना यह चाहते थे कि भाई-भाई में भी एक छोटा और एक बड़ा ऐसा रहता ही है। रामजी बड़े भाई बन गये तो उन्होंने समझा कि तजुरबे में कोई कमी, कोई नुक्स रह गया। इसलिए उन्होंने नया जन्म 'कृष्ण' का लिया, जिसमें वे छोटे भाई बने।

भाई और दोस्त

जैसे भाई-भाई में छोटा-बड़ा रहता है, वैसे दोस्त में छोटा दोस्त, बड़ा दोस्त नहीं होता। भाई-भाई के तो झगड़े होते हैं, कोर्ट में—अदालत में पहुँचते हैं। चार भाई हों तो उनके मुँह चार दिशाओं में होते हैं। भाई-भाई जितना लड़ सकते हैं, उतना दुश्मन भी नहीं लड़ सकता। एक भाई दूसरे भाई से कह सकता है कि क्या आप ही अकेले अपने बाप के बेटे हैं?—हम भी अपने बाप के बेटे हैं। जहाँ हक की बात आती है, वहाँ झगड़ा होता है और मुहब्बत नहीं रहती। वहाँ हर कोई अपने हक पर अड़ा रहता है। इससे कशमकश होती है। लड़ाई होती है। भाई-भाई में ऐसा हमेशा चलता है। देखिये, हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों भाई-भाई हैं। दक्षिण कोरिया और उत्तर कोरिया भाई-भाई हैं। इस तरह घर में, कुनबे में सिर्फ मुहब्बत नहीं रहती है, उसके साथ हक भी रहता है। इसके कारण घर में कानून पैठ गया है। सिर्फ प्यार होता तो वह स्वर्ग होता। लेकिन वहाँ हक की भी बात आती है।

ग्रामदान : मीठा, नरम, हलका हलुवा

हम तो गाँव में मालकियत मिटाना चाहते हैं। इसलिए उस गाँव में कानून नहीं पैठेगा। सब समान बनेंगे, एक-दूसरे पर प्यार करेंगे। हवा, पानी की तरह जमीन भी सबकी होगी, 'साँझीवालता' होगी। यह समझना आसान है और करना उससे भी ज्यादा आसान। क्योंकि उसमें किसीको कुछ तकलीफ नहीं होती। ग्रामदान याने हलुवा खाने की बात है। यह बड़ा मीठा, नरम और हलका है। इससे प्यार बढ़ेगा, फसल बढ़ेगी और इसके कारण धर्म भी बढ़ेगा। ऐसी हालत में किसीका कोई नुकसान नहीं होगा। यह बिलकुल एक टाररोड़ (Tar Road) है। उस पर आप अपनी मोटर बड़ी रफ्तार से छोड़ दें।

जहाँ दिल बाग, वहीं स्वर्ग

हमारे ग्रामदान के सरदार (श्री० बेनीराम जी, एम० एल० ए०) यहाँ हैं। हम तो कहते हैं कि जो १० ग्रामदान लायेगा, वह ग्रामदान का 'नायब सरदार' होगा। जो १०० ग्रामदान लायेगा, वह सरदार होगा। यहाँ यह हो सकता है। यहाँकी हवा में हर चीज पड़ी है। ऐसा तजुरबा हर जगह नहीं होता। हमारा 'ब्रह्मानन्द' (पंजाब के एक जोशीले जवान कार्यकर्ता) यहाँ आता है, अकेला घूमता है तो उसे यहाँ सब कुछ Free मिलता है, अच्छा अनुभव आता है। जहाँ ऐसी दिल की उदारता है, बड़ा दिल है, वहीं स्वर्ग है। यहाँ बड़े-बड़े पहाड़ हैं। बड़े-बड़े गुल हैं। बड़े-बड़े तालाब हैं। पर वह स्वर्ग नहीं है। जहाँ दिल बाग है, वहीं स्वर्ग है।

◆◆◆

प्रार्थना-प्रवचन ऊधमपुर (कश्मीर) १६-६-'५९

जमीन की मालकियत का दावा करना कुफ्र

हम सभी हिन्दुस्तान के बिलकुल एक कोने में पड़े हैं और अखबारों में सारी दुनिया की खबरें पढ़ते हैं। लेकिन दुनिया में आज क्या चल रहा है, दुनिया किधर जा रही है, इसकी जानकारी देहात के लोगों को कतई नहीं है। यह एक अजीब बात है कि देहात के लोग मेहनत करते हैं, ठंड, धूप बारिश सहन करके फसल पैदा करते हैं। उन्हींके सहारे कुल दुनिया की जिन्दगी चलती है। शहर के लोगों का कुल खाना उन्हें देहात से हासिल होता है। जैसे माँ-बाप मेहनत करके बच्चों के लिए खाना पैदा करते हैं। वैसे ही देहातवाले शहरवालों के माँ-बाप हैं और शहरवाले उनके बच्चे हैं। लेकिन दुनिया भर में क्या हलचलें हो रही हैं, इसकी कोई खबर देहातवालों के पास नहीं पहुँचती है।

पढ़े-लिखों का गुनाह

मैं समझता हूँ कि हम पढ़े-लिखे लोगों यह बड़ा गुनाह है। हम आपसे खाना हासिल करते हैं तो कम-से-कम इतना तो करें कि आपको मुफ्त में इल्म, जानकारी तो दें। परन्तु हम उतना भी नहीं करते हैं। उसका नतीजा यह होता है कि आपकी जिन्दगी आपके हाथ में है, ऐसा आप महसूस ही नहीं करते।

अभी यहाँपर बख्शी का राज्य चल रहा है, वह अच्छा चल रहा है। लेकिन जैसे पहले हम कहते थे कि परमात्मा जो करे, वही होगा, वैसे ही इन दिनों कहते हैं कि सरकार जो करेगी, वही होगा। याने परमात्मा की जगह सरकार ने ले ली है। परमात्मा नम्बर एक और सरकार नम्बर दो है या सरकार नम्बर एक और परमात्मा नम्बर दो है, यह कहना होगा।

हम अभी ऐसे देहातों में घूम रहे हैं, जहाँ पर कोई नहीं आता होगा। अभी बहन शान्तिदेवी (जम्मू की एक हाई-स्कूल की प्रधानाध्यापिका) यहाँ आयी है। वह कवि है। उसे पैदल चलने की आदत नहीं है, फिर भी चलती है, क्योंकि उसके दिल में तड़पन है। वह चाहती है कि कम-से-कम हममें गरीबों के लिए हमदर्दी तो पैदा हो। इस तरह की बहनें देहातों में घूमें और गाँववालों को समझायें कि देहातों की तरक्की कैसे होगी तो बहुत बड़ा अहसान होगा। परन्तु इस तरह समझाने-वाले गाँवों में आते ही नहीं। सिर्फ वोट माँगनेवाले पाँच साल में एक दफा आते हैं और फिर उनके दर्शन दुर्लभ हो जाते हैं।

[चालू]

अनुक्रम

१. ग्रामदान और शान्ति-सेना....	पूंच १७ जून '५९	पृष्ठ ५४१
२. ग्रामदान से कश्मीर को....	पूंच १८ जून '५९	पृष्ठ ५४२
३. जमीन की मालकियत....	ऊधमपुर १६ जून '५९	" ५४४

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता: गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी